9-3-67 9-3-67 ओम शान्ती रात्रीक्लास

यह पुरानी दुनियाँ आदि अच्छर(पंसद)नही आती है।एक तो बच्चे बने है ईश्वर बाप के।तुम बच्चों को समझ मिली है जब कि बाबा भगवान है हम उनके बच्चे है तो जरूर नई दुनियाँ के मालिक होने चाहिये। फादर को रचता भी कहा जाता है। रचता है नई दुनियाँ का स्वर्ग का। तो हम बच्चे जरूर स्वर्ग के मालिक होने चाहियें। हम रहने वाले शान्ति धाम के है। आत्मा को भी ज्ञान मिला है कि हम शान्ति के लिये क्यों भटकते है। यह दुनियाँ भी कोई काम की नही है। शरीर भी कोई काम का नही है। तुम जानते हो हम जीते जी मरते है। बाप से स्वर्ग का वर्सा पाते है। फिर उसकी भेंट में यहां क्या रखा है। अपने अन्दर में यह शुध अंहकार रहना चाहिये कि जो कुछ देखते है इन आखों से सब कुछ विनाश होने का है। हम स्वर्ग के मालिक बन रहे है। ड्रामा को डायलाग भी हमारे लिये नही है। हमको तो शान्ती में रह कर ही वर्से को याद करना है। बाप जो डायरेक्शन देवे उनपर चलना है। ऊंच ते ऊंच बाप जरूर ऊंच ही बनावेंगे। इसके लिये ही श्रीमत देते है। हर एक का अपने कर्मों का हिसाब किताब है। तो हर एक को अपने लिये पूछना पड़े। बाप कहते है तुम आधा कल्प के रोगी हो। रोगी बनते-2 अब महाविकारी महापापी बन गये हो। फिर महापुण्य आत्मा बन रही है। ऐसे कोई नही है जो तन मन धन सब दे देवे। पहले-2 तो जिन्होंने प्रवेश किया उनका ही तन मन धन बेहद की सर्विस में लगा दिया। हमको तो बादशाही मिलती है बाकी फिर क्या चाहिये। बाप लेने वाला कुछ भी नही है। देने वाला है। शिव बाबा तो कोई महल आदि नही बनाते है ना। मनुष्य तो घोर अन्धेरे में है। कुछ भी रहने का नही है। कोई बाबा भी तो मकान बनाते है। वो तो बनाते है बच्चों के ही रहने के लिये। पिछाड़ी में तुम सब पहाड़ी पर ही रहते हो। विनाश देखा तो सही परन्तु कब होगा वो पता नही है। योगबल से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में मेहनत लगती है।अब तुम जानते हो कि हम विश्व के मालिक थे। और कोई धर्म नही था। देवी धर्म बाद रावण राज्य स्टार्ट होता है। वो अदवैत यह द्वैत। वो देवता यह दैत्य। इन बातों को तुम्हारे सिवा और कोई समझ नही सकते है। अभी हम जा रहे है। हम संगम पर है। पहले शान्ति धाम में जावेंगे फिर सुख धाम में जावेंगे। बाप कहते है कि बहुत मीठे बनो। बहुत पूछते है कि बच्चे बाबा बहुत तंग करते है,हाँ क्यों नही प्यार से नही समझे तो थोड़ा आर,मार से सुधारना है। बच्चों का कल्याण तो करना है ना। यह बाप टीचर गुरू कम्बाइन्ड है। बेहद का कल्याण करने वाले है। अब बाप के पास बच्चे बैठे है। बर्थ डे आदि मनाने में क्यों वेस्ट पैसे गवायें। तुम्हारे यह पैसे मोस्ट वैल्युबुल है। जो कि विश्व को स्वर्ग बनाते है। इस लिये पैसे फालतू नही गवाओ। समय बाकी कम है। [illegible]। इनसे पहले भी बहुत खिटपिट होने की है। समझा जाता है आग तैयार हो रही है। परन्तु विनाश तब ही होगा जब कि हम आत्मा मुख्वंशावली ब्राह्मण कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। सारा दिन सारी रात बाप को और वर्से को याद करना है। बाहर में क्या लगा हुआ है। जिनकी कर्मातीत अवस्था होगा वो ही आवेंगे और वर्सा पावेंगे। दुनियाँ में तो देखो क्या लगा पड़ा है। पत्थर मारते रहते है। आसुरी दुनियाँ है ना। काबूम कोई। पत्थर लगाते है। यहाँ पर कोई आवाज कोई हंगामा नही है। सर्विस करनी है मालियों को। तुम बच्चों को यहाँ बहुत फायदा है। कितनी फुरसत में रहते हो। बाहरमें तो कितने ही झंझट रहते है। इसके दुनियाँ में दिल अब नही लगती है बड़ी गन्दी छी-2 दुनियाँ है। मनुष्य कितने घोर अन्धेरे में है। अब तुमको कितना सोझरा मिला है। तुम बच्चे जानते हो कि हम ड्रामा के अन्दर पार्ट धारी है। यह सृष्टी का चक्र है वह फिरता ही रहता है। इसमें फर्क नही पड़ सकता है। यह ड्रामा बड़ा वण्डरफुल है। बाप भी विचित्र है। और सब है चित्र वाले। विचित्र तो सब आत्मायें भी है परन्तु यहाँ आकर शरीर लेती है। बाप को बुलाते ही है तो जरूर यहाँ ही आना पड़े। प्रेरणा की बात ही नही है। विचार को [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। ओम